International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 97-99

विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर संबंधों का विद्यालय के वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन।

कुमारी कविता दवे[1], डॉ० जी० एस० मिश्रा[2]

[1] वरिष्ठ अध्यापक शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पौड़ीकला, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] सेवानिवृत्त प्राचार्य, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यालय के वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। कार्य संतुष्टि के मापन हेतु ''प्रमोद कुमार एवं डी. एन. मूथा की कार्य संतुष्टि मापनी एवं जीवन संतुष्टि के मापन हेतु ओ. जी. आलम एवं डॉ. रामजी श्रीवास्तव की जीवन संतुष्टि मापनी तथा विद्यालय वातावरण मापनी–डॉ. के. एस. मिश्रा द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग यादृच्छिक विधि से चयनित 600 शिक्षक एवं 800 विद्यार्थियों पर किया गया है। परिणामों से ज्ञात होता है कि विद्यालयीन वातावरण पर शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का सार्थक प्रभाव पड़ता है। शासकीय विद्यालय के शिक्षकों का विद्यालयीन वातावरण पर कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि का अधिक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

मूल शब्द : कार्य संतुष्टि, जीवन संतुष्टि, विद्यालयों के शिक्षकों।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन को सँवारने के मार्ग का प्रारंभिक बिन्दु है, जहाँ से वह अपनी विशिष्ट जीवन शैली और लक्ष्यों की ओर चलने तथा पहुँचने का ज्ञान प्राप्त करता है, जिसके कारण उसका और समाज का विकास होता है। शिक्षा के द्वारा मानव की अंतर्निहित योग्यताओं को विकसित करके समाज को संपन्न बनाया जाता सकता है क्योंकि शिक्षा का लक्ष्य है ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना और लगातार सीखने की प्रवृत्ति। करूणा, प्रेम और श्रेष्ठ परम्पराओं का विकास भी शिक्षा के उद्देश्य हैं। यह तभी संभव है, जब विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास एक अच्छे अकादमिक वातावरण में योग्य एवं दक्ष शिक्षकों द्वारा हो। जब तक शिक्षक, शिक्षा के प्रति समर्पित नहीं होगा तब तक अच्छी शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती है।

सामान्य रूप से विद्यालयों को शासकीय एवं अशासकीय प्रबन्धन के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। इन दोनों प्रकार के विद्यालयों में प्रशासकीय दृष्टिकोण से निश्चित रूप से अंतर है, परंतु दोनों प्रकार के विद्यालयों का प्रमुख उद्देश्य उच्च गुणवत्तापूर्ण विद्यार्थियों का निर्माण एवं विकास करना है। सामान्यतः शिक्षण का आधार शिक्षक हैं। शिक्षक कतिपय कौशलों तकनीक तथा प्रविधि के द्वारा सरलता से बालक में वांछित व्यवहार परिवर्तन करने का प्रयास करता हैं। विद्यालय में शिक्षक सबसे प्रमुख व्यक्ति है, जो बालक के व्यक्तित्व के निर्माण में सहायता प्रदान करता है। बालकों के अंदर अध्यापक उनकी मुख्य आवश्यकता तथा रूचि के अनुसार ही परिवर्तन लाने की सोचता है, जिससे प्रत्येक बालक एक निश्चित तथा उचित ढंग से कार्य कर सके और अपने अंदर उचित परिवर्तन कर सके। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षक का स्वयं का व्यक्तित्व बालक के व्यवहार पर बहुत अधिक प्रभाव डालता है। यदि शिक्षक अपने कार्य व जीवन से संतुष्ट रहें, उन्हें तनाव न हो तो वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ विद्यालयीन वातावरण को भी उत्कृष्ट बनाते हैं। होता, सुजाता (1980), राइस, डब्ल्यू राबर्ट, नियर पी जेनिट, हंट जी रेमंड (1980) ने कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि में धनात्मक सहसंबंध को बताया। डेमीरेल हुसैन (2013), आदिनतन बेलगिन एव के ओ सी हेकन (2016) ने पाया कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि व जीवन संतुष्टि उच्च सहसंबंध होता है।

मुखोपाध्याय, दिलीप कुमार (1988) ने बताया कि विद्यालय वातावरण, शैक्षणिक उपलब्धि पर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का सार्थक योगदान रहता हैं। फिनाइस किलवेक (2016) ने बताया कि शिक्षको की कार्य संतुष्टि का विद्यालय वातावरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता हैं।

वर्तमान में जिस तीव्र गति से हमारी शिक्षा पद्धति, सामाजिक वातावरण एवं नैतिक मूल्यों में परिवर्तन हो रहे हैं। उस स्थिति में ज्ञात किया जाए कि शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ अपने कार्य व जीवन से संतुष्ट है अथवा नहीं क्योंकि जब शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट होंगे तभी अपनी पूर्ण दक्षता, उत्साह उमंग के साथ अपने दायित्व का निर्वाहन करेंगे। अतः शोधकर्ता ने यह जानने का प्रयास किया है कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि का विद्यालय वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य

विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यालय वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना

विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यालय वातावरण पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

चर– स्वतंत्र चर
1. कार्य संतुष्टि
2. जीवन संतुष्टि
3. प्रबंधन की प्रकृति

परतंत्र चर – विद्यालय वातावरण
नियंत्रित चर – कम से कम पांच वर्ष का शैक्षणिक अनुभव

विधि

न्यादर्श में चयनित शिक्षकों और शिक्षिकाओं को कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि मापनी प्रशासित की तत्पश्चात उनका फलांकन करके उच्च एवं निम्न श्रेणी में वर्गीकरण किया। वर्गीकृत शिक्षकों के चयनित विद्यार्थियों पर विद्यालय वातावरण के परीक्षण को प्रशासित किया। तत्पश्चात् फलांकन करके सांख्यिकी का उपयोग करके परिणामों की विश्लेषण एवं व्याख्या करके निष्कर्ष प्राप्त किए।

न्यादर्श

शोध कार्य में जबलपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 600 शिक्षक–शिक्षिकाएँ एवं 800 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया।

उपकरण

कार्य संतुष्टि मापनी–प्रमोद कुमर एवं डी. एन. मूथा
जीवन संतुष्टि मापनी–ओ. जी. आलम एवं रामजी श्रीवास्तव
विद्यालय वातावरण मापनी– डॉ. के. एस. मिश्रा
परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या– इसे निम्नानुसार प्रस्तुत किया गया है।
तालिका क्र.1 में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों की उच्च एवं निम्न कार्य संतुष्टि और जीवन संतुष्टि के विभिन्न संयोजन में प्रसरण विश्लेषण का मान 17.32 है जो 0.01 के सार्थकता स्तर पर सार्थक है। शासकीय विद्यालय के निम्न कार्य संतुष्टि एवं उच्च जीवन संतुष्टि वाले समूह का विद्यालय वातावरण का प्रत्यक्षीकरण सर्वाधिक अच्छा है। इसके विपरीत अशासकीय विद्यालय के निम्न कार्य संतुष्टि एवं निम्न जीवन संतुष्टि वाले समूह का विद्यालय वातावरण का प्रत्यक्षीकरण सबसे कम अच्छा है।

तालिका 1: विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर संबंधों का विद्यालय वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन

विद्यालय का प्रकार	स्मूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
शासकीय	उच्च कार्य संतुष्टि/उच्च जीवन संतुष्टि	40	178.08	13.51
	उच्च कार्य संतुष्टि/निम्न जीवन संतुष्टि	40	170.45	26.12
	निम्न कार्य संतुष्टि/उच्च जीवन संतुष्टि	40	179.05	26.91
	निम्न कार्य संतुष्टि/निम्न जीवन संतुष्टि	40	168.73	12.81
अशासकीय	उच्च कार्य संतुष्टि/उच्च जीवन संतुष्टि	40	161.78	11.50
	उच्च कार्य संतुष्टि/निम्न जीवन संतुष्टि	40	164ण्18	10ण्87
	निम्न कार्य संतुष्टि/उच्च जीवन संतुष्टि	40	157ण्53	8ण्71
	निम्न कार्य संतुष्टि/निम्न जीवन संतुष्टि	40	145ण्73	12ण्43

प्रसरण विश्लेषण सारांश तालिका

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	'एफ' अनुपात	'पी' मान
समूहों के मध्य	7	33865.50	4837.93	17.32	<0.01
समूहों के बीच	312	87133.25	279.27		

स्वतंत्रता के अंश – 7, 312
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.03
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.69

उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से विद्यालयीन वातावरण पर शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका 2: विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि व जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर संबंधों का विद्यालय वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन

विद्यालय का प्रकार	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
शासकीय	उच्च कार्य संतुष्टि/उच्च जीवन संतुष्टि	40	166.03	24.76
	उच्च कार्य संतुष्टि/निम्न जीवन संतुष्टि	40	154.23	22.05
	निम्न कार्य संतुष्टि/उच्च जीवन संतुष्टि	40	181.05	23.07
	निम्न कार्य संतुष्टि/निम्न जीवन संतुष्टि	40	169.55	25.35
अशासकीय	उच्च कार्य संतुष्टि/उच्च जीवन संतुष्टि	40	153.25	9.04
	उच्च कार्य संतुष्टि/निम्न जीवन संतुष्टि	40	159.43	11.86
	निम्न कार्य संतुष्टि/उच्च जीवन संतुष्टि	40	165.33	22.30
	निम्न कार्य संतुष्टि/निम्न जीवन संतुष्टि	40	146.30	17.26

प्रसरण विश्लेषण सारांश तालिका

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	'एफ' अनुपात	'पी' मान
समूहों के मध्य	7	33488.19	4784.03	11.63	<0.01
समूहों के बीच	312	128376.20	411.46		

स्वतंत्रता के अंश – 7, 312 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.03
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.69

तालिका क्र.2 से स्पष्ट है कि शासकीय व अशासकीय विद्यालयों की शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यालयीन वातावरण पर प्रभाव पड़ता है। सांख्यिकीय दृष्टिकोण से विभिन्न समूह के मध्य सार्थक अंतर है। प्राप्त ''एफ'' अनुपात का मान 11.63 है जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।
शासकीय विद्यालयों की निम्न कार्य संतुष्टि एवं उच्च जीवन संतुष्टि वाले शिक्षिकाओं के समूह का विद्यालयीन वातावरण, अन्य समूहों की तुलना में अच्छा हैं। जबकि इसके विपरीत अशासकीय विद्यालयों के निम्न कार्य संतुष्टि व निम्न जीवन संतुष्टि वाले समूह का विद्यालयीन वातावरण सबसे कम अच्छा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कार्य संतुष्टि को अनेक कारक प्रभावित करते हैं शिक्षित बेरोजगारी की समस्या को देखते हुए शासकीय विद्यालय के शिक्षक नियमित सेवा में कार्यरत् है यद्यपि कार्य संतुष्टि निम्न है परंतु उनका भविष्य सुरक्षित है। अतः अपने जीवन से संतुष्ट है एवं उनकी जीवन संतुष्टि उच्च है। अतः वे अपने कार्य की पूर्ण उत्साह एवं दक्षतापर्वूक करते हैं। वहीं दूसरी ओर अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों में अपने कार्य के प्रति कुछ नियमितता नहीं हैं जिससे वे अपने भविष्य के प्रति चिंताग्रस्त हैं अतः वे अपने जीवन से भी संतुष्ट नहीं है संभवतः वे अपनी ही समस्याओं से ग्रस्त हैं विद्यालय वातावरण को सकारात्मक बनाने की भूमिका का निर्वाह नहीं कर पाने में अमसर्थ हैं। डेमीरेल हुसैन (2013) में बताया कि शिक्षकों की उच्च कार्य संतुष्टि शिक्षक की कार्य प्रणाली और जीवन संतुष्टि दोनों को प्रभावित करती है। आदिनतन बेलगिन, केओसी हाकेन (2016) में बताया कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का उनकी जीवन संतुष्टि पर प्रभाव पड़ता हैं।
मूरे एम केरा (2012) ने बताया कि विद्यालय वातावरण के संतुष्टपूर्ण होने में शिक्षकों की कार्य असंतुष्टि की भूमिका होती है। शिक्षकों में कार्य असंतुष्टि होने के कारण विद्यार्थियों की और सामाजिक समस्याएँ बढ़ती है। इसी संदर्भ में मुखोपाध्याय दिलीप कुमार (1988) में बताया विद्यालयीन वातावरण के निर्धारक कारकों में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एक महत्वपूर्ण कारक हैं। अतः स्पष्ट है कि जब शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि उच्च होगी तब ही वे निष्ठापूर्वक विद्यार्थियों के विकास के लिए विद्यालयीन वातावरण की उत्कृष्ट बनाएगे।
उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से विद्यालयीन वातावरण पर शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यालयीन वातावरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

सन्दर्भ

1. कपिल डॉ. एच. के. एवं सिंह ममता (2012) *सांख्यिकी के मूल तत्व,* आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, पृ.स. 49–455
2. कोचर दिनेशचंद (2000) *उद्योग एवं संगठन मनोविज्ञान सिद्धांत और समीक्षा,* तृतीय संस्करण, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना
3. पाठक, पी. डी. (1982)–*शिक्षा मनोविज्ञान,* तेतीसवाँ संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
4. Aydintan Belgin, KOC Hakan. The Relationship between Job Satisfaction and Life Satisfaction: An Empirical study on Teachers International Journal of Business and Social Science, 2016, 7(10).
5. Demirel, Husne. An Investigation of the Relationship between Job and Life Satisfaction among Teachers. Elsevier ltd open access under CC By-NC-ND license, 2013.
6. Hota, Suiata. Working Women's perceptions of their self and environment in relation to Job and Life Satisfaction Fifth survey of Research in Education NCERT. 1990; 2:1704.
7. Rice W Bobert, Near P Janet, Hunt G Raymond. The job satisfaction/life satisfaction Relationship: A Review of Empirical Research, Basic and Applied Social Psychology. 1980; 1(1):37-64.